दलित मुसलमान- अवधारणात्मक परिचय

Rohit Singh
&
Dr. S. M. Mishra
Sidhi (M.P.)

मुस्लिम समाज का जातीय स्तर उच्च, मध्य और निम्न श्रेणी में बंटा हुआ है, जिसमें अशराफ- उच्च, अजलाफ- मध्य और अरजाल- निम्न जातीय संस्तरण में विभक्त हैं। अषराफ समाज के लोग अपने को कुलीन मानते है। वहीं अजलाफ हिन्दू धर्म के उच्च वर्ग से परिवर्तित जातियों के रूप में है और अपने आपको अरजाल से श्रेष्ठ मानते हैं, जबकि अरजाल निम्न श्रेणी के दलित मुस्लिम है। वस्तुतः दलित मुसलमान अपने-अपने संस्कारों की गिरफ्त में हैं और जातीय श्रेष्ठता की रक्षा करना इनका प्रमुख उद्देष्य हो गया है। दलित मुस्लिम समाज जहाँ एक ओर इस्लामिक सिद्धान्तों को मानते हैं, वहीं जातिवाद को अपने कौम के विकास में बाधा भी मानते हैं। फिर भी जातिवाद के बंधन में बंधे हैं और अपनी रूढ़िवादी सोच को अषिक्षा के कारण समाप्त भी नहीं कर पा रहे हैं। दलित मुस्लिम समाज में वर्ग विभेद होने के कारण ये सामाजिक उन्नति में मुस्लिम समाज के अन्य वर्गो अर्थात अषराफ व अजलाफ तबकों से पीछे हैं। सामाजिक संस्तरण में ये सबसे निचले स्तर के श्रेणी में जीवन-यापन कर रहे हैं।

दलित मुसलमान का अवधारणात्मक परिचय समुदाय के परिप्रेक्ष्य में व्यक्त किया गया है साथ ही मुस्लिम समाज में दलित मुसलमान की स्थिति, जाति व्यवस्था, वर्ग विभेद एवं संघर्ष, आरक्षण, दलित मुसलमान और जातीय राजनीति को विष्लेषित किया गया है।

मुस्लिम समुदाय में जाति व्यवस्था का वर्चस्व है। इस समाज में जातीय संस्तरण के कारण दलित मुस्लिम समुदाय का उदय हुआ। दलित मुस्लिम समुदाय का उदय वस्तुतः सामाजिक भेदभाव व परंम्परागत पेषा अपनाने के कारण हुआ। क्योंकि यह समाज जाति और कर्म पर आधारित समाज है। जाति जन्म के कारण बनी और कर्म आर्थिक पेषा को अपनाने से। अतः वर्ग व जाति व्यवस्था द्वारा जिन्हें अछूत कहकर शोषित किया गया वे आज भी किसी न किसी रूप में दलित व पिछड़े हैं।

जाति आधारित समाज मुख्यतः सत्ता केन्द्रित समाज है जहाँ पर सभी राजनीति, सांस्कृतिक प्रणाली, धार्मिक व्यख्यायें और आर्थिक संरचना का एक ही मकसद होता है, उच्च जातियों के हितों को साधना और सत्ता पर उनके नियंत्रण को बरकार रखना, किसी भी प्रकार एकाधिपत्य चाहे वह ज्ञान, सत्ता, धर्म या धन-दौलत का हो न सिर्फ अनैतिक है, बल्कि पूरी तरह से अक्षम भी साबित होता है, जाति व्यवस्था ने हमारे मुल्क की अकसरियत दलित-बहुजन आबादी को सत्ता, ज्ञान और अर्थ से दूर रख कर उनकी संज्ञानात्मकता और आत्मविश्वास को रौंदने का काम किया। जिसके फलस्वरूप हम अपने चारों ओर गरीबी के समंदर के बीच समृद्धि के छोटे-छोटे टापू देखते हैं।

मुस्लिम समाज में वर्ग विभेद एवं संघर्ष आज भी विद्यमान है। जिसके फलस्वरूप दलित मुसलमानों की सामाजिक स्थित निम्न सोपान पर है। इनके साथ कोई भी अन्य मुसलमान सामाजिक व्यवहार नहीं रखता हे और न ही उन्हें मस्जिद और सार्वजनिक कब्रिस्तानों में प्रवेष करने दिया जाता है। मुसलमानों में कई बिरादरियां ऐसी हैं, जिनकी समाजी, तालीमी और माली हालत हिन्दू दलितों से भी खराब है। इन बिरादरियों का नाम और पेषा भी हिन्दू दलितों से मिलता-जुलता है। मसलन हिन्दू धोबी, मुस्लिम धोबी, हिन्दू नट, मुस्लिम नट, हिन्दूओं में हलखोर तो मुसलमनों में हलालखोर आदि कई एक दर्जन ऐसी बिरादरियाँ हैं, जो पहली नजर में ही शेड्यूल कास्ट के दर्जे की हकदार हैं।

अतः मुस्लिम अल्पसंख्यक समुदाय में जातीय राजनीति का प्रभाव है। यह इस बात से स्पष्ट होता है कि प्रमुख धार्मिक संस्थानों, सरकारी एवं गैर सरकारी संस्थाओं में उच्च एवं अगड़े मुसलमानों का कब्जा है निम्न जाति के व्यक्ति की राजनीति में भागीदारी लगभग शून्य है। मुसलमानों में जातिवाद के कारण उच्च जाति के मुस्लिम निम्न जाति के व्यक्तियों के साथ भेदभावपूर्ण रवैया अपनाते हैं। जबकि सभी मुसलमान इस्लामिक सिद्धान्तों को मानते हैं जिसमें किसी भी प्रकार की जाति या जातिवाद के लिए कोई स्थान नहीं है परन्तु फिर भी मुसलमानों में जातिवाद की जड़ मजबूत होती जा रही है।

दलित मुसलमान समुदाय के सामाजिक संस्तरण में जाति व्यवस्था विद्यमान है। यह समुदाय इस्लामिक सिन्दातों से भटक गया है। प्राप्त अभिमतों से ज्ञात होता है कि दलित मुस्लिम समाज अपनी अस्मिता की सुरक्षा हेतु अपने को खानदान व वंष परंम्परा से जोड़े हुये है। इनके समाज में बिरादारी जाति के अर्थ में है। जिसके कारण यह शादी-ब्याह बिरादरी में ही करते है। बिरादरी में शादी-ब्याह करना अपने को शुद्धता और गौरव मानते हैं, जिससे ही जातिवाद जैसी समस्याएँ उत्पन्न हुई हैं।

दलित मुस्लिम समुदाय में षिक्षा के अभाव के कारण इनके समाज में जातीय समस्याएँ उत्पन्न हो रही है। धार्मिक षिक्षा ग्रहण करने के कारण भी ये आधुनिक षिक्षा के क्षेत्र में पिछड़े हुए है। महिलाओं में षिक्षा की कमी है। आर्थिक गतिविधि में लगे होने के कारण इनके बच्चें प्रायः स्कूल कम ही जा पाते है। षिक्षा के प्रति प्रेरित करने की आवष्यकता है। समाज वैज्ञानिक दृष्टिकोण से वृद्ध वर्ग जहाँ परम्परा का पोषक माना जाता है, वहीं युवा वर्ग नवीनता का सूचक है। वर्तमान समय में युवाओं की बढ़ती हुई महत्ता को नकारा नहीं जा सकता है।

वस्तुतः दलित मुसलमान अपने पिछड़ेपन के आधारों को पहचानने लगे हैं। अतः इससे यह अच्छा संकेत मिलता हैं क्योंकि अवरोधों की पहचान करके ही उनको समाप्त करने के प्रयास किये जा सकते हैं। जैसे सर्वेक्षण से स्पष्ट हुआ कि गरीबी, अशिक्षा प्रधान तत्व है तो क्या कारण है कि इनका निदान नहीं हो पा रहा। जो भी हो इनमें नेतृत्व हीनता व मुस्लिम अंतर्द्वन्द्व इसका कारण है, जो आज भी परम्परागत और आधुनिकता के मध्य झूल रहा है। अध्ययनगत आंकड़ों से ज्ञात हुआ है कि दलित मुस्लिम समुदाय में सामाजिक स्थिति पूर्व जैसी ही है।

वस्तुतः पेषा व्यक्ति के वर्गीय संस्तरण में उसकी स्थिति एवं जीवन-षैली को प्रभावित करता है और इसकी प्रकृति इनके सामाजिक मूल्यों, विचारों एवं व्यक्तिगत हितों को निर्धारित करती है। परम्परागत दलित मुस्लिम समाज संरचना में व्यवसाय का विभाजन जातिगत मूल्यों तथा उससे संबंधित श्रेष्ठता एवं हीनता की भावनाओं पर आधारित था, जाति एवं व्यवसाय से संबंध जाति व्यवस्था की प्रमुख विषेषता रही है।

अध्ययनगत आंकड़ों व तथ्यों से स्पष्ट हुआ है कि दलित मुसलमान परिवारों की आर्थिक स्थिति निम्न श्रेणी की है। इस समाज के लोगों में आर्थिक पिछड़ापन अधिक है। ग्रामीण और शहरी दोनों स्थानों पर रहने वाले दलित मुस्लिम समाजों के लोगों द्वारा परंम्परागत कार्य अधिक किये जाते हैं। सामाजिक उन्नति और विकास में आर्थिक संसाधन का जहाँ अधिक महत्व होता है वहीं आर्थिक व्यवस्था द्वारा समुदाय व व्यक्ति का आर्थिक स्तर पढ़ता है। दलित मुस्लिम समाज में अषिक्षा, अकुषलता तथा

रूढ़िवादी परंम्परा का पालन अधिक किया जाता है जिससे समाज आर्थिक पिछड़ेपन का शिकार है।

निष्कर्ष

दलित मुस्लिम समुदाय में संवेदनशीलता, जागरूकता, लगभग नगण्य है। इस समुदाय के लोगों द्वारा अनेक कारणों से जातीयता को बढ़ावा दे रहे हैं इसके अतिरिक्त संकुचित दृष्टिकोण, रूढ़िवादी सोच व अशिक्षा जातिवाद को अधिक पुष्ट कर रहा है। दलित मुस्लिम समुदाय उक्त तथ्यों से सर्वथा अनभिज्ञ बना हुआ है। ये जातिवाद को बढ़ावा देकर अपना व अपने समाज का खुद अहित कर रहे हैं। अपने व अपने समाज के प्रति आत्मघाती रास्ता चुन रहे है। दलित मुस्लिम समुदाय की उन्नति के लिये इस बढ़ते जातिवाद पर रोक लगाना अनिवार्य शर्त है।

संदर्भ ग्रन्थ सूची

1 मजूमदार, डी0 एन0 (1952), "रेश एण्ड कल्चर ऑफ इण्डिया", एशिया पब्लिशिंग हाउस, बम्बई।

2 मार्क्स, गैबेरियो (1982), "कन्सटीट्यूशन टू इण्डियन सोसियोलाजी।

3 राय, एम0 पी0 (1989), "भारतीय सरकार एवं राजनीति", कॉलिज बुक डिपो जयपुर।

4 रशीद, ए0 (1969), "सोसायटी एण्ड कल्चर इन मैडिवल इण्डिया", कलकत्ता।

5 साकिर, मोइन, (1980) "पालिटिक्स ऑफ माइनोर्टीज", अजन्ता पब्लिकेशनस।

6 सिंह, हरजिन्दर, (1977), "कास्ट अमंग नॉन हिन्दूज इन इण्डिया", नैशनल पब्लिकेशन्स हाऊस, नई दिल्ली।

7 श्रीनिवास, एम0 एन0 (1957), "कास्ट इन मोर्डन इण्डिया", एशिया पब्लिकेशन्स, बम्बई।

8 सिंह, नारायण एवं राजेश्वर प्रसाद (1996), "मध्यपूर्व की प्राचीन जातियाँ और सभ्यतायें", भारतीय साहित्य प्रकाशन, मेरठ।

9 शर्मा, अजब सिंह (1964), "भारतीय हिन्दू मुसलमान और भारतीय संस्कृति", अमर प्रकाशन।

10 वॉल, आबर्ट जॉन, (1982) "इस्लाम कम्यूनिटी एण्ड चैन्ज इन द मार्डन वर्ल्ड", वैस्टर्न प्रेस इंग्लैण्ड।

11 यासीन, मुहम्मद (1958), "सोसल हिस्ट्री ऑफ इस्लामिक इण्डिया", लखनऊ।

प्रकाशित पत्र-पत्रिकायें एवं लेख

शोध-पत्र एवं शोध-प्रबन्ध:

1. सरल, रविकान्त (2004), "भारतीय मुसलमानों की राजनीति में भूमिका", शोध-पत्र।

2. वाधवा, कमलेश कुमार (1933), "माइनोरटी शेफ इन इण्डिया", शोध-प्रबन्ध, मेरठ।

3. खाँ, फजलुल्ला (2000), "इकानोमिक इम्प्रूमेन्ट ऑफ मुस्लिम इन इण्डिया", (चेन्नई गोष्ठी में वाचित पत्र)।